हे प्रभो! यह तेरापंथ

विज्ञप्ति

एक प्रति - 10 रु.
एक वर्ष - 300 रु.
पन्द्रह वर्ष - 3100 रु.

तेरापंथ की केन्द्रीय गतिविधियों का सर्वाधिक लोकप्रिय साप्ताहिक मुखपत्र

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) वर्ष 30 : अंक 6 : दिल्ली : 26 अप्रेल - 2 मई 2024

युगप्रधान महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमण महाराष्ट्र में

तेरापंथ धर्मसंघ के अनुशास्ता आचार्यप्रवर का अहमदनगर में प्रथम पदार्पण

१४ अप्रेल। जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के किसी भी आचार्यप्रवर के अहमदनगर पदार्पण का प्रथम अवसर स्थानीय जैन समाज को हर्षोल्लास से ओतप्रोत बनाए हुए था। बड़ी संख्या में लोग विहार प्रारम्भ होने से पूर्व ही प्रवास स्थल में पहुंच गए। पूज्यप्रवर ने सूर्योदय के कुछ समय पश्चात चास से अहमदनगर की ओर प्रस्थान किया। पूज्यचरण ज्यों-ज्यों गंतव्य की ओर बढ़ते जा रहे थे, जनता की उपस्थिति भी बढ़ती जा रही थी। लोगों की संख्या उनका उत्साह इस बात का अहसास ही नहीं होने दे रहे थे कि नगर में मात्र सात तेरापंथी परिवार ही निवासित हैं। तेरापंथी श्रद्धालु अपने आराध्य के आगमन के प्रसंग में अतिशय आह्लादित बने हुए थे और यह स्वाभाविक भी था, किन्तु अन्य जैन समाज का उत्साह विस्मयकारी प्रतीत हुआ। स्थान-स्थान पर लोगों के झुण्ड पूज्यप्रवर की अगवानी में सभक्ति खड़े थे। पूज्यप्रवर उनके निकट पधार रहे थे तो वे श्रीचरणों में अपनी भावांजलि अर्पित कर पावन आशीष प्राप्त कर रहे थे। कई घरों आदि के आसपास उनसे संबंधित लोगों ने स्वयं से संबद्ध स्थान में पधारने का आग्रहपूर्वक निवेदन किया। पूज्यप्रवर ने उन्हें मार्ग पर अथवा उसके आसपास ही मंगलपाठ सुनाया।

प्राप्त जानकारी के अनुसार स्थानकवासी परंपरा के स्व. आचार्यश्री आनंदऋषिजी से संबंधित इस शहर में करीब पांच हजार जैन परिवार निवासित हैं, उनमें से अधिकांश संख्या स्थानकवासी समाज के लोगों की है। इसके अतिरिक्त मूर्तिपूजक और दिगम्बर परंपरा से जुड़े हुए सैंकड़ों परिवार भी इस नगर में निवासित हैं। पूज्यप्रवर के स्वागत में मूर्तिपूजक समाज के लोग भी अच्छी संख्या में उपस्थित थे। उनके निवेदन पर पूज्यप्रवर वासुपूज्य स्वामी जैन श्वेताम्बर मंदिर परिसर में पधारने को उद्यत हुए, किन्तु मार्गस्थ वृक्ष के फूल व बीज इसमें बाधक बन गए। ऐसी स्थिति में वैकल्पिक मार्ग की खोज की गई, किन्तु निरापद मार्ग न मिलने की स्थिति में पूज्यप्रवर ने मार्ग में ही कुछ समय आसीन होकर मंगलपाठ सुनाया। कुछ ही दूरी पर स्थित आनंदऋषि हॉस्पिटल से जुड़े हुए लोगों की प्रार्थना पर पूज्यप्रवर मार्ग के दांयीं ओर कुछ भीतर स्थित उस हॉस्पिटल में पधारे। लोगों ने पूज्यप्रवर का स्वागत करते हुए हॉस्पिटल के विषय में अवगति प्रस्तुत की। आचार्यप्रवर ने वहां मंगलपाठ उच्चरित किया।

अहमदनगर एजुकेशन सोसायटी द्वारा संचालित विद्यालय में पूज्यप्रवर का आज का प्रवास निर्धारित था। विद्यालय के मुख्य द्वार पर अहमदनगर एजुकेशन सोसायटी के अध्यक्ष श्री अभय फिरोदिया के पुत्र तथा सोसायटी के सहकार्यवाह श्री गौरव फिरोदिया, प्रमुख कार्यवाह श्रीमती छाया फिरोदिया, उपाध्यक्ष श्री अशोक मूथा, कोषाध्यक्ष श्री प्रकाश गांधी, भाऊसाहेब फिरोदिया हाइ स्कूल के प्राचार्य श्री उल्हास दुगड़, रूपीबाई मोतीलालजी बोरा न्यू इंग्लिश स्कूल के प्राचार्य श्री अजय बारगल, अशोकभाऊ फिरोदिया इंग्लिश मीडियम स्कूल के प्राचार्य श्री प्रभाकर भाबड ने पूज्यप्रवर का सश्रद्धा स्वागत किया। पूज्यप्रवर के पदार्पण से विद्यालय परिसर में प्रसन्नता व उत्साह का माहौल था। कई विद्यार्थी परेड करते हुए पूज्यप्रवर के आगे-आगे चल रहे थे तो कई लेजिम के साथ थिरक रहे थे। जयघोषों व स्वागत गीतों से वातावरण गुंजायमान बना हुआ था। पूज्यप्रवर करीब ८.३ कि.मी का विहार संपन्न कर ए.इ.एस. अशोकभाऊ फिरोदिया इंग्लिश मीडियम स्कूल एण्ड जूनियर कॉलेज परिसर में स्थित हाइ स्कूल में भी पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ। स्थानीय विधायक श्री संग्राम जगताप आदि ने भी पूज्यप्रवर को वंदन कर पावन आशीर्वाद प्राप्त किया।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में स्थानीय जनता बड़ी संख्या में उपस्थित थी। परम पूज्य आचार्यप्रवर ने करीब दुगुने समय (करीब इकचालीस मिनिट) तक प्रवचन कर प्रवचन पिपासु लोगों को तृप्त बनाया। आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में अहिंसा, संयम और तप रूप धर्म को आत्मसात करने की प्रेरणा प्रदान की। पूज्यप्रवर ने प्रसंगवश कहा- 'हमारे यहां बत्तीस आगम सम्मत हैं।

आचार्यश्री तुलसी महाराष्ट्र में भी पधारे। आचार्यश्री तुलसी और आनंदऋषिजी महाराज का सन् १९७५ में दिल्ली में मिलना हुआ था। आचार्यश्री तुलसी स्थानक में पधारे थे। वहां आनंदऋषिजी महाराज थे। उनसे मिलना हुआ। फिर आनंदऋषिजी महाराज आचार्यश्री तुलसी को पहुंचाने के लिए नीचे पधारे। इस प्रकार एक सौहार्दपूर्ण मिलन हुआ था। सन् १९७४ में भगवान महावीर की पच्चीसवीं निर्वाण शताब्दी के अवसर पर भी आचार्यश्री तुलसी, आनंदऋषिजी महाराज आदि कई आचार्य, साधु-साध्वियां दिल्ली में थे। आचार्यश्री तुलसी और आनंदऋषिजी महाराज समकालीन रहे हैं। हमारा शिवमुनिजी महाराज से अनेक बार मिलन हुआ।'

आचार्यप्रवर ने आगे कहा- 'आज हमारा अहमदनगर में आना हुआ है। अहमदनगर में बड़ा जैन समाज है। पिछले कई दिनों से यहां के लोग हमारे सम्पर्क में आते रहे हैं। जैन समाज व अन्य लोगों में भी सद्भावना, नैतिकता व नशामुक्ति का प्रभाव रहे। धर्म के प्रति अच्छा सम्मान का भाव बना रहे। विपत्ति आने पर भी धर्म साथ रहे, उसे न छोड़ें। धर्म साथ है तो मानना चाहिए कि बहुत बड़ी शक्ति साथ है।

फिरोदिया विद्यालय है। बच्चों में अच्छे संस्कारों का विकास होता रहे, फिरोदिया परिवार में ऐसा प्रयास होता रहे।'

कार्यक्रम में श्रीमती संगीता बच्छावत, श्री सुभाष नाहर, श्री यश पटावरी तथा वासुपूज्य स्वामी जैन श्वेताम्बर संघ, माणिकनगर-अहमदनगर की ओर से श्री अशोक मूथा ने पूज्यप्रवर के स्वागत में अपनी अभिव्यक्ति दी। तेरापंथ महिला मण्डल-औरंगाबाद की सदस्याओं ने स्वागत गीत का संगान किया।

अहमदनगर एजुकेशन सोसायटी की प्रमुख कार्यवाह श्रीमती छाया फिरोदिया ने कहा- 'आज हमारे अहमदनगर में आचार्यश्री महाश्रमणजी जैसे महाज्ञानी, ज्ञानयोगी, तेरापंथ धर्मसंघ के अधिशास्ता के दर्शन का महायोग बना है। आपके दर्शन का अवसर प्राप्त कर हम सभी धन्य हो गए हैं। यह आचार्यश्री आनंदऋषिजी की कर्मभूमि एवं निर्वाणभूमि है। आपके पैरों की धूल से यह भूमि ऊर्जावान बन गई है। प्रचंड धूप में आपका विहार व कार्यप्रणाली हम सभी को नई सीख और प्रेरणा प्रदान करने वाली है। मैं पुनः आपका स्वागत एवं अभिनंदन करती हूं।'

आज स्थानीय सांसद श्री सुजय विखे की धर्मपत्नी श्रीमती धनश्री विखे, स्थानीय विधायक श्री संग्राम जगताप, अहमदनगर के पूर्व व प्रथम महापौर श्री भगवानराव फुलसौंदर, पद्मश्री श्री पोपटराव पवार (हिवरेबाजार) आदि पूज्यप्रवर के दर्शनार्थ आए। पूज्यप्रवर ने उन्हें पावन पथदर्शन प्रदान किया। आज दिन-रात में अहमदनगर जैन समाज के लोग बड़ी संख्या में पूज्यप्रवर के दर्शन व पावन आशीर्वाद से लाभान्वित हुए। इनमें से कई लोग प्रायः नियमित रूप से टेलिविजन अथवा सोश्यल मीडिया पर पूज्यप्रवर के प्रवचन सुनते हैं। पूज्यप्रवर के व्यक्तित्व से सुपरिचित होते हुए भी उनके लिए आचार्यप्रवर के साक्षात् दर्शन का प्रथम अनुभव था, जो कि उन्हें विशेष रूप से आह्लादित बनाते हुए आचार्यप्रवर के प्रति उनके आस्थाभाव को पुष्ट बना रहा था। दर्शनार्थियों में कई ऐसे लोग भी थे, जो तेरापंथ धर्मसंघ और आचार्यप्रवर से प्रायः अपरिचित थे। उत्सुकतावश आए वे लोग भी आचार्यप्रवर के व्यक्तित्व से अत्यन्त प्रभावित हुए और मन-में श्रद्धाभाव लिए लौटे।

स्थानकवासी आचार्यश्री आनंदऋषिजी के समाधिस्थल आनंदधाम में दो परंपराओं का मधुर मिलन

१५ अप्रेल। परम पूज्य आचार्यप्रवर ने प्रातः अहमदनगर में स्थित फिरोदिया स्कूल से प्रस्थान किया। पूज्यप्रवर संस्थान की प्रमुख कार्यवाह श्रीमती छाया फिरोदिया के निवेदन पर उनके कार्यालय में पधारे और मंगलपाठ उच्चरित किया। फिरोदिया परिवार के सदस्यों ने पूज्यप्रवर का स्वागत करते हुए संस्थान के विषय

में अवगति प्रस्तुत करते हुए कहा कि वर्तमान में इस संस्थान द्वारा सोलह विद्या संस्थान संचालित हैं, जिनमें सत्रह हजार से ज्यादा विद्यार्थी अध्ययन कर रहे हैं।

कुछ दिन पूर्व अहमदनगर के स्थानकवासी समाज के लोग इस भावना के साथ पूज्य सन्निधि में उपस्थिति हुए कि आचार्यप्रवर अहमदनगर में स्थित स्थानकवासी आचार्य श्री आनंदऋषिजी के समाधिस्थल परिसर आनंदधाम में पधारें। उन्होंने पूज्यप्रवर से इस आश्य का निवेदन किया कि वहां कुन्दनऋषिजी आदि साधु-साध्वियां हैं, वे भी आपसे मिलना चाहते हैं। आचार्यप्रवर ने उनकी प्रार्थना को स्वीकार करते हुए कहा कि आनंदधाम में यथासंभव आने का भाव है तथा वहां स्थित संतों से मिले बिना यथासंभवतया आगे बढ़ने का भाव नहीं है। पूज्यप्रवर के मुखारविंद से यह स्वीकृति सुनकर समागत प्रार्थीजन खिल उठे। उन्होंने हर्षध्वनि की। आज आचार्यप्रवर ने कुछ अतिरिक्त दूरी तय करते हुए आनंदधाम की ओर अपने चरण बढ़ाए। स्थानकवासी परंपरा के मुनि आलोकऋषिजी पूज्यप्रवर की अगवानी में काफी दूर तक पहुंच गए। कुछ दूर बढ़ने के बाद मुनि आदर्शऋषिजी तथा कई साध्वियां पूज्यप्रवर की अगवानी करने पहुंचे। पूज्यप्रवर आनंदधाम में पधारे। वहां स्थानकवासी समाज के काफी लोग पूज्यप्रवर की प्रतीक्षा में खड़े थे। कई लोग पूज्यप्रवर के दर्शन हेतु लालायित-से दिखाई दिए। भीड़ के बीच वे यत्नपूर्वक पूज्यप्रवर के दर्शन कर धन्यता की अनुभूति कर रहे थे।

पूज्यप्रवर 'आनंद स्मृति कक्ष' में पधारे। वहां स्थानकवासी आचार्यश्री आनंदऋषिजी के जीवन प्रसंगों को दर्शाया गया है तथा उनसे संबंधित कुछ उपकरणों की भी प्रदर्शनी वहां है। पूज्यप्रवर ने उनका कुछ अवलोकन किया। तदुपरान्त पूज्यप्रवर समीपस्थ हॉल में पधारे। इस हॉल के समीप ही आचार्यश्री आनंदऋषिजी की समाधि है।

हॉल में स्थानकवासी परंपरा के वयोवृद्ध मुनि कुंदनऋषिजी पहले से अवस्थित थे। उन्होंने अभिवादनपूर्वक पूज्यप्रवर का भावभीना स्वागत किया। आचार्यप्रवर वहां आसीन हुए। स्थानकवासी साधु-साध्वियां भी वहां उपस्थित हो गए। पूज्यप्रवर के साथ समागत हमारे तेरापंथ धर्मसंघ के संत भी वहां अवस्थित हुए। पूज्यप्रवर का स्थानकवासी मुनि कुंदनऋषिजी आदि से कुछ समय तक वार्तालाप हुआ। वार्ता के दौरान मुनि कुंदनऋषिजी बोले-'हमारे लिए बहुत प्रसन्नता की बात है कि आप यहां पधारे।' उन्होंने परम पूज्य गुरुदेव तुलसी और आचार्यश्री आनंदऋषिजी के मिलन की स्मृति भी की।'

आचार्यप्रवर समीप ही स्थित आचार्यश्री आनंदऋषिजी के समाधिस्थल के निकट पधारे और उसका अवलोकन किया। आनंदधाम परिसर में पूज्यप्रवर के पदार्पण के संदर्भ में स्थानकवासी मुनि आदर्शऋषिजी ने कहा-'आज महान गुरुओं के महान शिष्य आचार्यश्री महाश्रमणजी यहां पधारे हैं, यह बहुत बड़ी बात है। उन्होंने बताया कि आचार्यश्री महाप्रज्ञजी का बहुत साहित्य पढ़ा है। पूज्यप्रवर ने स्थानकवासी साध्वियों को आगम स्वाध्याय की प्रेरणा प्रदान की।' पूज्यप्रवर आनंदधाम से प्रस्थित हुए। मुनि आदर्शऋषिजी आनंदधाम के द्वार तक और मुनि आलोकऋषिजी और काफी दूर तक पूज्यप्रवर को पहुंचाने साथ चले।

विहार पथ के आसपास भारतीय सेना की छावनी स्थित थी। इस दृष्टि से मार्ग के दोनों और वृक्ष भी बड़ी संख्या में लगे हुए दिखाई दिए। उन सघन वृक्षों की छाया ने सूर्य के तीव्र आतप से काफी बचाव कर दिया। निवोड़ी के ग्राम्यजन पूज्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीर्वाद से लाभान्वित बने। पूज्यप्रवर करीब ११.६ कि.मी. का विहार कर सरोलाबाड़ी में स्थित विश्व भारती एकेडमी कॉलेज ऑफ फार्मेसी में पधारे। आज सायं तक का प्रवास यहीं हुआ। विद्यालय की प्रिंसिपल श्रीमती वैशाली नवले आदि ने पूज्यप्रवर का सादर स्वागत किया।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में अनासक्त रहने की प्रेरणा प्रदान की।

कार्यक्रम में विश्व भारती एकेडमी कॉलेज ऑफ फार्मेसी की प्रिंसिपल श्रीमती वैशाली नवले ने कहा-'मैं विश्व भारती एकेडमी परिवार की ओर से युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी को वंदन अर्पण करते हुए हार्दिक स्वागत करती हूं। आपका पदार्पण हम सभी के लिए परम सौभाग्य की बात है। आज आपकी चरणरज

से हमारी एकेडमी पावन हो गई है। आचार्यजी की इस महान यात्रा में विश्व भारती परिवार का छोटा सहयोग भी हमें आह्लादित कर रहा है। हम आचार्यजी के दिखाए पथ पर चलने का प्रयास करेंगे।'

पूज्यप्रवर के सायंकालीन प्रवास स्थल विद्यालय के शिक्षक श्री हरिश्चन्द्र ढगे ने कहा- 'मैं स्वयं और अपने स्कूल परिवार की ओर से परम पूज्य संत आचार्यश्री महाश्रमणजी का हार्दिक स्वागत करता हूं। आपका संदेश केवल भारत ही नहीं, पूरे विश्व के लिए आवश्यक है। आपका आशीर्वाद हमें सदैव प्राप्त होता रहे।'

प्रतिकूलता के बीच सायंकालीन विहार

परमाराध्य आचार्यप्रवर के सायंकालीन विहार के प्रारम्भ का समय करीब ५.४५ बजे निर्धारित था, किन्तु उससे कुछ समय पहले मौसम ने करवट ली और तेज हवा के साथ हल्की बूंदाबांदी भी प्रारम्भ हो गई, जो कभी तेज तो कभी मंद रूप में बरसती रही। सभी साध्वियां व कई संत वर्षा प्रारम्भ होने से पहले ही अगले गंतव्य की ओर प्रस्थान कर चुके थे। करीब ६.२३ बजे वर्षा रुकने की सूचना मिली तो परम पूज्य आचार्यप्रवर ने विश्व भारती एकेडमी कॉलेज ऑफ फार्मेसी परिसर से प्रस्थान किया। विश्व भारती एकेडमी कॉलेज की प्रिंसिपल श्रीमती वैशाली नवले आदि ने पूज्यचरणों में अपने कृतज्ञभाव व मंगल भाव समर्पित कर पावन आशीर्वाद प्राप्त किया।

विहार प्रारम्भ होने के कुछ ही समय पश्चात रिमझिम वर्षा का दौर पुनः शुरू हो गया। मिट्टी के साथ बारिश के पानी के मिश्रण से कीचड़ की स्थिति बन गई, जो कहीं-कहीं तो फिसलन का अहसास करा रही थी। तूफान के कारण मार्ग में एक वृक्ष गिरने से यातायात अवरुद्ध हो गया। स्थानीय ग्रामीणों के सहयोग से कार्यकर्ताओं ने उसे हटाकर मार्ग को निर्बाध बनाने में सफलता प्राप्त की, किन्तु ट्रैफिक जाम की स्थिति में पूज्यप्रवर व आसपास चल रहे संतों आदि को वाहनों के बीच वाले खाली स्थान से निकलने के लिए भुजंग-की-सी गति धारण करनी पड़ी। वर्षा व यातायात के व्यवधान के कारण प्रवास स्थल में पहुंचते-पहुंचते सूर्यास्त के बाद भी काफी समय व्यतीत हो गया। बादलों के कारण कुछ जल्दी ही अंधेरे की-सी स्थिति बन गई। यदा-कदा बादल गरज रहे थे और बिजलियां कौंध रही थीं। वर्षा भी कभी मंद तो कभी कुछ तेज रूप में बरसती रही। इस प्रतिकूल स्थिति में भी पूज्यप्रवर का समत्व अडोल रहा। आखिर पूज्यप्रवर करीब ३.६ कि.मी. का विहार कर टाकलीकाझी में स्थित श्री बंसीभाऊ म्हस्के माध्यमिक व उच्च माध्यमिक विद्यालय में पधारे। आज का रात्रिकालीन प्रवास यहीं हुआ। प्रिंसिपल श्री कुमार म्हस्के आदि ने पूज्यप्रवर का भक्तिपूर्वक स्वागत किया।

चिंचोड़ी पाटिल में श्रद्धायुक्त स्वागत

१६ अप्रेल। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर प्रातः टाकलीकाझी से चिंचोड़ी पाटिल के लिए प्रस्थित हुए। गतरात्रिक प्रवास स्थल विद्यालय के प्रिंसिपल श्री कुमार म्हस्के आदि ने पूज्यप्रवर को नमन कर अपने कृतज्ञ भाव अभिव्यक्त किए। पूज्यप्रवर ने उन्हें पावन आशीर्वाद प्रदान किया। विहार के प्रारम्भिक समय में गत सायंकाल हुई वर्षा का प्रभाव वातावरण पर छाया हुआ था, किन्तु सूर्य ज्यों-ज्यों ऊर्ध्वारोहण करता जा रहा था, वातावरण पर वह अपना प्रभुत्व स्थापित करता जा रहा था। विहार पथ के आसपास संतरों के बागान व प्याज की फसल आदि बहुलता लिए हुए दिखाई दे रहे थे।

मार्ग में चिंचोड़ी पाटिल में निवासित जैन समाज के लोग पूज्यप्रवर के स्वागत में भक्तिपूर्वक उपस्थित थे। बताया गया कि यहां जैन समाज के नौ परिवार निवासित हैं। आचार्यप्रवर के पदार्पण का प्रसंग उन्हें आह्लादित बनाए हुए था। 'वेलकम, वेलकम-महाश्रमणजी वेलकम' जैसे घोष उनके आंतरिक उत्साह को दर्शा रहे थे। स्थानीय सरपंच श्री शरद पवार आदि ने भी पूज्यप्रवर का भावभीना स्वागत किया। आचार्यप्रवर करीब ९.८ कि.मी. का विहार कर चिंचोड़ी पाटिल में स्थित न्यू इंग्लिश स्कूल व कनिष्ठ महाविद्यालय में पधारे। आज सायं तक का प्रवास यहीं हुआ।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के अंतर्गत परम पावन आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में विद्यार्थियों में ज्ञान के साथ सत्संस्कारों के विकास की प्रेरणा प्रदान की। आचार्यप्रवर ने उपस्थित विद्यार्थियों को सद्भावना, नैतिकता व नशामुक्ति की प्रतिज्ञाएं स्वीकार कराईं।

कार्यक्रम में श्रीमती करिश्मा छाजेड़ ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। चिंचोड़ी पाटिल के सरपंच श्री शरद पवार ने कहा- 'आज हमारे गांव में युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी का मंगल पदार्पण हुआ है, यह हमारे हर्ष का विषय है। पचपन हजार किलोमीटर से अधिक की पदयात्रा कर आपका यहां पदार्पण हम सभी के लिए परम सौभाग्य की बात है। मैं समस्त ग्रामीणों की ओर से आपका हार्दिक स्वागत-अभिनंदन करता हूं। आपके आगमन से हमारे गांव में होली और दीपावली मानों एक साथ मनाई जा रही है। आपने हम सभी का सुन्दर मार्गदर्शन किया है, उसके लिए हम सभी आपके आभारी हैं।'

नगरपालिका पंचायत समिति सभापति श्री प्रवीण कोकाटे ने कहा- 'मैं समस्त ग्रामीण जनता की ओर से पूज्य संत आचार्यश्री महाश्रमणजी का हार्दिक स्वागत करता हूं। हमारा सौभाग्य है कि आप जैसे संत के दर्शन अपने गांव में ही प्राप्त हो गए। आपकी सद्भावना, नैतिकता व नशामुक्ति की प्रेरणा से हम सभी का कल्याण होगा।'

स्कूल कमेटी की ओर से आबा साहब कोकाटे ने कहा- 'आज हमारे लिए मानों अमृतयोग बना है कि हमारे विद्यालय में ऐसे महान संत का पदयात्रा करते हुए पदार्पण हुआ है। आपके आगमन से हमारा यह प्रांगण पावन हो गया है। मानवता के कल्याण के लिए की जाने वाली आपकी यात्रा से हम सभी का भी कल्याण हो रहा है। सभी महापुरुषों की भांति आप भी सामाजिक बुराइयों को दूर करने की प्रेरणा प्रदान कर रहे हैं। मैं समस्त ग्रामीणों की ओर आपका तहेदिल से स्वागत करता हूं।'

सायंकाल परम पावन आचार्यप्रवर ने चिंचोड़ी पाटिल से आठवड की ओर प्रस्थान किया। मार्ग में एक व्यक्ति पूज्यप्रवर को भेंट करने की भावना से पचास रुपए का नोट लेकर आया। उसे साधुचर्या की अवगति दी गई। पूज्यप्रवर ने उसे पावन आशीर्वाद प्रदान किया। आचार्यप्रवर करीब ३.३ कि.मी. का विहार सम्पन्न कर आठवड में स्थित जिला परिषद प्राथमिक शाला में पधारे। आज का रात्रिकालीन प्रवास यहीं हुआ।

आचार्यश्री भिक्षु अभिनिष्क्रमण दिवस

१७ अप्रेल। परमाराध्य आचार्यप्रवर प्रातः आठवड से धानोरा की ओर प्रस्थित हुए। आठवड के ग्राम्यजन अपने-अपने घरों के निकट पूज्यप्रवर के दर्शनार्थ खड़े थे। पूज्यप्रवर ने उन्हें मंगल आशीर्वाद प्रदान किया। आरोह-अवरोहयुक्त आज का विहार पथ आसपास लगे बोर्ड्स के अनुसार घाट के रूप में था।

पूज्यप्रवर ने मार्ग में अहमदनगर जिले की सीमा को पार कर बीड़ जिले में प्रवेश किया। इसी के साथ आचार्यप्रवर की पश्चिम महाराष्ट्र की यात्रा प्रायः परिसम्पन्न हुई और मराठवाड़ा क्षेत्र की यात्रा शुरु हुई। पूज्यप्रवर का स्वल्पकाल के लिए पुनः अहमदनगर जिले में पधारना पूर्व निर्धारित है, वह यात्रा पश्चिम महाराष्ट्र की यात्रा के रूप में रहेगी। वाघडूज के ग्रामीणों को भी पूज्यप्रवर के दर्शन और मंगल आशीष से लाभान्वित होने का सौभाग्य मिला। पूज्यप्रवर ने उन्हें पावन प्रेरणा प्रदान की। एक ग्राम्य महिला पूज्यप्रवर को अर्पित करने की भावना से रुपए निकालने लगी। पूज्यप्रवर के आसपास चल रहे कार्यकर्ताओं ने उसे समझाकर रोका। आचार्यप्रवर ने उसे पावन आशीर्वाद प्रदान किया। पूज्यप्रवर करीब १२.२ कि.मी. का विहार परिसम्पन्न कर धानोरा में स्थित जनता माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालय में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ। स्थानीय सरपंच श्री राजाभाऊ आदि ने पूज्यप्रवर का भावभीना स्वागत किया।

आज चैत्र शुक्ला नवमी/आचार्य भिक्षु अभिनिष्क्रमण दिवस/और रामनवमी का प्रसंग भी था। परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के अंतर्गत अपने पावन प्रवचन में कहा- 'दुनिया में अनेक-अनेक महापुरुष हुए हैं। श्री रामचन्द्रजी का नाम प्रसिद्ध है। जैन परंपरा में उन्हें मोक्षंगत माना गया है। आज चैत्र शुक्ला नवमी है, रामनवमी है। विशिष्ट महापुरुष के साथ जुड़कर कोई-कोई तिथि अपने आप में मानों गरिमापूर्ण स्थान को प्राप्त कर लेती है।

चैत्र शुक्ला नवमी परम पूज्य भिक्षु स्वामी के साथ भी जुड़ी हुई है। आज से दो सौ चौंसठ वर्ष पूर्व भीखणजी महाराज ने अभिनिष्क्रमण किया था। मारवाड़ के कांठा क्षेत्र में आचार्यश्री भिक्षु का जन्म स्थान भी है, महाप्रयाण का स्थान भी है, अभिनिष्क्रमण का स्थान भी है और स्थानकवासी परंपरा में दीक्षा का स्थान

भी है। उनका जन्म कंटालिया और महाप्रयाण सिरियारी में हुआ। स्थानकवासी परंपरा में उनकी दीक्षा बगड़ी में हुई और बगड़ी में ही उन्होंने आज के दिन स्थानकवासी परंपरा से अभिनिष्क्रमण किया। भीखणजी महाराज रघुनाथजी महाराज के संप्रदाय में साधु बने थे।

भीखणजी महाराज के पास बुद्धि, प्रतिभा का अच्छा क्षयोपशम था, ऐसा प्रतीत हो रहा है। हर किसी व्यक्ति में ऐसी प्रतिभा का होना कठिन है, किसी-किसी में वैसी प्रतिभा हो सकती है। भीखणजी महाराज में ज्ञानावरणीय कर्म का अच्छा क्षयोपशम था और उसका उपयोग करने में उनका अच्छा पुरुषार्थ भी चलता था। उन्होंने शास्त्राभ्यास किया। उन्हें असंतोष हुआ। असंतोष बुरा भी सकता है और कोई-कोई असंतोष उत्थान की दिशा में बढाने वाला भी हो सकता है। भीखणजी महाराज को असंतोष हुआ और उन्हें लगा कि जिस संप्रदाय में मैं हूं, वहां के आचार-विचार का जो स्थापन है, जो व्यवस्था चल रही है, वह संतोषप्रद नहीं है, उसमें परिष्कार-सुधार अपेक्षित है। उन्होंने इस दृष्टि से अपने गुरु से चर्चा-वार्ता भी की, किन्तु उनको उस चर्चा-वार्ता का अच्छा नतीजा निकलता हुआ नहीं लगा तो उन्होंने चिंतन कर लिया कि अब अभिनिष्क्रमण ही श्रेयस्कर है।

भीखणजी महाराज ने अभिनिष्क्रमण किया और कठिनाई भी मानों स्वागत करने के लिए आ गई। गांव में रहने को कोई स्थान नहीं मिला होगा तो वे आगे बढ़े, किन्तु आगे तेज आंधी की स्थिति सामने आई। आखिर बगड़ी के गांव बाहर श्मशान भूमि में बनी जैतसिंहजी छतरी में उनका रात्रि प्रवास हुआ। भीखणजी महाराज में विशिष्ट बुद्धि थी तो यह भी प्रतीत होता था कि उनमें मनोबल, साहस भी अच्छा था, विशिष्ट था।

कुछ महीनों बाद तेरापंथ नामकरण हो गया। संख्या के आधार पर दिए गए तेरापंथ नाम की जानकारी जब भीखणजी महाराज को हुई तो वे पट्ट से नीचे उतरे और उन्होंने इस आशय की बात कही- 'हे प्रभो! यह तेरापंथ है।' प्रभो! यह पंथ तो तुम्हारा है, हम तो इस पर चलने वाले पथिक हैं। (पूज्यप्रवर ने प्रभो तुम्हारे पावन पथ पर ....गीत का आंशिक संगान किया।)

चैत्र शुक्ला नवमी का दिन। हमारे धर्मसंघ की पृष्ठभूमि से जुड़ा हुआ है। आज के दिन हमारे परम पूजनीय, परम स्तवनीय भिक्षु स्वामी ने रघुनाथजी महाराज के संप्रदाय से अभिनिष्क्रमण किया था, फिर एक संघ की प्रतिष्ठापना भी हो गई। भिक्षु स्वामी के जीवन से हम साहस, मनोबल की प्रेरणा ले सकते हैं। उनमें जो ज्ञानवत्ता और प्रतिभा थी, वैसी निर्मल प्रतिभा हममें भी विकसित हो। भिक्षु स्वामी में श्रद्धा, आस्था का भाव जानने को मिलता है। हमारे में भी अपने आराध्य के प्रति, आचार्य के प्रति, नियमों के प्रति आस्था, निष्ठा का भाव पुष्ट रहे।

हमारा धर्मसंघ अपनी तीसरी शताब्दी में चल रहा है और इस शताब्दी का चौसठवां वर्ष चल रहा है। हम हमारे धर्मसंघ को ज्ञान, दर्शन, चारित्र व तप की दृष्टि से वर्धमान बनाए रखने का प्रयास करते रहें तथा हम हमारे धर्मसंघ व दूसरों की भी जितनी आध्यात्मिक सेवा कर सकें, करने का यथासंभव प्रयास करते रहें।

आचार्यश्री भिक्षु हमारे धर्मसंघ के आद्य आचार्य हुए हैं। उनके कितने-कितने ग्रन्थ हैं, सिद्धांतपरक ग्रंथ भी हैं और आख्यानपरक ग्रंथ भी हैं। भिक्षु वाङ्मय का अनुवाद, संपादन का कार्य चल रहा है। आचार्यश्री भिक्षु के ग्रंथों व उनके ग्रंथों के कुछ सार से युक्त भिक्षु विचार दर्शन जैसी पुस्तकों का स्वाध्याय किया जा सकता है।'

पूज्यप्रवर के स्वागत में स्कूल के वाइस प्रिंसिपल श्री ढोके ने कहा- 'आज हमारे विद्यालय में आचार्यश्री महाश्रमणजी महाराज का शुभागमन हुआ है। भगवान राम की जन्मतिथि के दिन ऐसे महान संत के आगमन से मानों धानोरा का भाग्य जाग उठा है। आपके आगमन से ऐसा लग रहा है, जैसे सतयुग का आगमन हो गया है। मैं ऐसे महासंत के चरणों में कोटि-कोटि नमन करता हूं।'

धानोरा के सरपंच श्री राजू भाऊ शेलके ने कहा- 'आज आचार्यश्रीजी के आगमन से हमारे गांव में खूब आनंद का वातावरण छाया हुआ है। आप जैसे महापुरुष के दर्शन और अमृतरूपी प्रवचन को सुनकर जीवन धन्य हो गया। ऐसी कृपा प्रदान करने के लिए मैं आपका बहुत-बहुत धन्यवाद करता हूं। हम सभी को आपका ऐसा आशीर्वाद मिले कि हमारे गांव में रामराज्य जैसा आनंद हमेशा बना रहे।'

जैन समाज की ओर से जयकुमार चोनोदिया ने कहा- 'आज धानोरा में परम पूजनीय संत आचार्यश्री महाश्रमणजी का शुभागमन हुआ है। इससे हमारी पूरी नगरी पुलकित हो उठी है। आपके आगमन से चारों ओर प्रसन्नता का वातावरण छा गया है। मैं आपको श्रद्धा के साथ वंदन करता हूं।'

भक्तिमान कड़ावासियों द्वारा भव्य स्वागत

१८ अप्रेल। परम पूज्य आचार्यप्रवर ने प्रातः धानोरा से कड़ा की ओर प्रस्थान किया। आचार्यप्रवर ने विहार के मध्य दो स्थानों पर आसीन होकर जप आदि का क्रम सम्पन्न किया। उनमें से पहला स्थान एक वृक्ष के आसपास का खुला स्थान था तो दूसरा साकरखेड़ में 'संत बाबूदेव महाराज मंदिर' का स्थान। पूज्यप्रवर ने जप आदि का अपना दैनंदिन क्रम सम्पन्न करने के पश्चात ही उदक (जल) ग्रहण किया। इस अनुष्ठान के कारण काफी विलम्ब भी हो गया और सूर्य किरणों ने भी तीव्र रूप धारण कर लिया, किन्तु नियमित चर्या के प्रति निष्ठावान व सजग आचार्यप्रवर ने उसकी परवाह किए बिना साधनानुष्ठान सम्पन्न किया। साकरखेड़ के निवासीजन आचार्यप्रवर के दर्शन और मंगल आशीर्वाद से लाभान्वित हुए।

परम पूज्य आचार्यप्रवर के पदार्पण का प्रसंग कड़ावासियों को अतिशय उल्लसित बनाए हुए था। कड़ा के लोग गत कई दिनों से पूज्यप्रवर की सन्निधि में उपस्थित हो रहे थे और पूज्यप्रवर के पदार्पण व कार्यक्रम से संबंधित व्यवस्थाओं आदि का मार्गदर्शन प्राप्त कर रहे थे। लोगों की उपस्थिति और उत्साह को देखकर यह कयास लगाना लगभग नामुमकिन-सा था कि कड़ा में एक भी तेरापंथी परिवार नहीं है। सैंकड़ों लोग पूज्यप्रवर की अगवानी में उपस्थित थे। मार्ग के आसपास लगे बड़े-बड़े होर्डिंग्स, जैन ध्वज, स्वागत जुलूस में गूंजते घोष आदि उनके आंतरिक उत्साह को दर्शा रहे थे। पूज्यप्रवर कुछ अतिरिक्त दूरी तय कर कड़ा के स्थानक में पधारे और वहां मंगलपाठ उच्चरित किया।

स्वागत जुलूस में स्थानकवासी समाज की कन्याएं व महिलाएं साफा बांधे हुए उपस्थित थीं। उनमें कई कन्याएं दुपहिया वाहन पर जयघोष लगाते हुए गतिमान थीं तो कई अपने हाथों में जैन ध्वज थामे हुए थीं। श्री अमोलक जैन विद्या प्रसारक मण्डल के अंतर्गत संचालित विद्यालय के विद्यार्थी, शिक्षक आदि भी स्वागत जुलूस में बड़ी संख्या में संभागिता लिए हुए थे। कई बच्चे लेजिम की लय धुन पर थिरक रहे थे तो एनसीसी से जुड़े हुए विद्यार्थी कदमताल करते हुए परेड कर रहे थे। कई छात्राएं सिर पर कलश आदि लिए चल रही थीं, जो मानों आज के शुभ अवसर को द्योतित कर रही थीं। इस प्रकार स्वागत जुलूस कई सौ मीटर लम्बा हो गया। ऐसा लग रहा था कि आचार्यप्रवर किसी तेरापंथी श्रद्धालु कस्बे में प्रवेश कर रहे हैं। पूज्यप्रवर करीब ८.८ कि.मी. का विहार कर कड़ा में स्थित श्रीमती शांतिबाई कांतिलाल गांधी कला, अमोलक विज्ञान व पन्नालाल हीरालाल गांधी वाणिज्य महाविद्यालय में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ। मण्डल के अध्यक्ष श्री योगेश भण्डारी, मंत्री श्री हेमंत पोकरणा, महाविद्यालय के प्रिंसिपल श्री नंदकुमार राठी, कोठारी हाइ स्कूल के प्रिंसिपल मथा शिकारे आदि ने पूज्यप्रवर का श्रद्धायुक्त स्वागत किया।

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के अंतर्गत अपने पावन प्रवचन में प्रवचन श्रवण के लाभों की चर्चा की। यह वर्ष श्री अमोलक जैन विद्या प्रसारक मण्डल के शताब्दी वर्ष के रूप में मनाया जा रहा है। इस संदर्भ में आचार्यप्रवर ने कहा--'स्थानकवासी आम्नाय में अमोलकऋषिजी का अपना इतिहास है। मैंने कितने वर्षों पहले उनका नाम सुना था। कोई संस्था अपने सौवें वर्ष में प्रवेश करती है तो वह उसके लिए मानों एक महत्त्वपूर्ण अवसर होता है। सौ वर्ष एक अच्छी कालावधि है। शताब्दी वर्ष का अवसर आए तो संस्था के अधिकारियों को चिंतन करना चाहिए कि कितने आगे बढ़े हैं तथा कितना और आगे बढ़ा जा सकता है। इतने वर्षों में संस्था ने क्या-क्या किया, उसका आकलन किया जा सकता है तथा संस्था आगे क्या कर सकती है, आध्यात्मिक-धार्मिक दृष्टि क्या सेवा दे सकती है, उस पर ध्यान देकर अच्छी योजना बनाई जाए तो सौवें वर्ष का प्रसंग संस्था के लिए और अधिक सार्थक बन सकता है। सौवें वर्ष के निमित्त से अनेक आयोजन भी हो सकते हैं, वह एक छोटा हिस्सा है, किन्तु इस अवसर पर आध्यात्मिक-धार्मिक ठोस करणीय कार्यों की योजना बन जाए, फिर वह योजना क्रियान्विति की दिशा में आगे बढ़े तो संस्थान और ज्यादा विकास कर सकता है।

श्री अमोलक जैन विद्या प्रसारक मण्डल के सौवें वर्ष का प्रसंग है, ऐसा बताया गया है। यहां पढ़ने वाले विद्यार्थियों में ज्ञान व सत्संस्कारों का अच्छा विकास होता रहे। पर्युषण, महावीर जयंती, भगवान महावीर निर्वाण दिवस, अक्षय तृतीया आदि अवसरों पर विद्यार्थियों को जैनिज्म के संदर्भ में भी यथासंभव जानकारी दी जाती रहे।

आज हमारा कड़ा में आना हुआ है। आदमी को किसी बात में कड़ा भी होना चाहिए तो किसी बात में नरम भी होना चाहिए। जहां जो उपयुक्त हो, वहां वैसा व्यवहार होना चाहिए। कड़ा के लोग कई दिनों से हमारे संपर्क में आ रहे थे। लोगों में उत्साह देखने को मिल रहा है। ऐसा लगा कि जैसे कोई यह तेरापंथ समाज का ही क्षेत्र है। स्थानकवासी समाज है, किन्तु माहौल देखकर ऐसा लग रहा है कि उनके आचार्य आए हैं या तेरापंथ के आचार्य आए हैं। मानों कोई भेद नहीं है। हम जैन शासन में फलते-फूलते रहें, अध्यात्म की साधना करते रहें, जैन शासन की भी सेवा करते रहें तथा दूसरों की भी जितनी हो सके, आध्यात्मिक-धार्मिक सेवा करने का प्रयास करते रहें। कड़ा के जैन समाज के बच्चों में धार्मिक पाठशाला आदि के माध्यम से अच्छे संस्कार आते रहें, तत्त्वज्ञान का अच्छा विकास होता रहे।'

कार्यक्रम में संस्थान के विद्यार्थियों ने आचार्यप्रवर के स्वागत में नवकार महामंत्र तथा प्रार्थना को प्रस्तुति दी। स्थानीय महिलाओं ने स्वागत गीत का संगान किया। छात्रा सृष्टि ने अपनी प्रस्तुति के द्वारा श्रीचरणों में अपने भावसुमन अर्पित किए। स्कूल के वाइस प्रिंसिपल श्री जवाहर भण्डारी व श्री अमोलक जैन विद्या प्रसारक मंडल के मंत्री श्री हेमंत पोखना ने अपनी भावपूर्ण अभिव्यक्ति दी।

आज दिन-रात में कड़ा के लोगों ने बड़ी संख्या में पूज्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीर्वाद का सौभाग्य प्राप्त किया। रात्रि में श्री अमोलक जैन विद्या प्रसारक मंडल के न्यासियों आदि को पूज्यप्रवर की निकट उपासना का अवसर भी प्राप्त हुआ। जिसमें उन्होंने अपने मंडल के शताब्दी वर्ष के संदर्भ में गतिविधियों की अवगति प्रस्तुत कर पावन पथदर्शन प्राप्त किया। पूज्यप्रवर ने उनकी जिज्ञासा को समाहित करते हुए उन्हें तेरापंथ धर्मसंघ व स्थानकवासी परंपरा के अंतर की भी अवगति प्रदान की।

आज भारतीय जनता पार्टी की राष्ट्रीय महामंत्री, महाराष्ट्र की पूर्व मंत्री तथा वर्तमान लोकसभा चुनाव की भारतीय जनता पार्टी की ओर से स्थानीय प्रत्याशी पंकजा गोपीनाथ मुंडे, महाराष्ट्र विधान परिषद के सदस्य व पूर्व मंत्री श्री सुरेशराव धस ने पूज्यप्रवर के दर्शन कर पावन आशीर्वाद ग्रहण किया।

विज्ञप्ति के संदर्भ में पत्र व्यवहार का पता एवं संपर्क सूत्र

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा, 3 पोर्चुगीज चर्च स्ट्रीट, कोलकाता 700001

मो.नं. - 7044778888 Email : vigyapti@terapanthinfo.com

ऑनलाइन विज्ञप्ति Terapanth मोबाईल एप तथा www.terapanthinfo.com पर उपलब्ध

Date of Publication : 29-04-2024

(Page 1-8)

26 April-2 May 2024

विज्ञप्ति

Postal Reg. No. DL(C) -01/1243/2024-26 Wed.-Thu.

L.No.-U(C)-200/2024-26

Licence to Post without Pre-payment

Regd. No. 61758/95 Office of Posting Delhi PSO Delhi-6

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक- संजय खटेड़ द्वारा प्रिंट मास्टर इन्टरप्राइजेज, एल.एल.पी-६३ जी.एफ.पटपड़गंज इंडस्ट्रियल एरिया, दिल्ली से मुद्रित तथा अणुव्रत भवन, 210 दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली- 110002 से प्रकाशित। सम्पादक : छगनसिंह सांखला